हिंदी | कक्षा दसवीं

अपठित गद्यांश

निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर विकल्पों में से चुनकर लिखिए।

यह घटना सन 1899 की है। उन दिनों कोलकाता में प्लेग फैला हुआ था। शायद ही कोई ऐसा घर बचा था, जहाँ यह बीमारी न पहुँची हो। ऐसी विकट स्थिति में भी स्वामी विवेकानंद और उनके शिष्य रोगियों की सेवा-सुश्रूषा में जुटे हुए थे। वे अपने हाथों से नगर की गलियाँ और बाज़ार साफ़ करते थे और जिस घर में प्लेग का कोई मरीज होता था, उसे दवा आदि देकर उसका उपचार करते थे। उसी दौरान कुछ लोग स्वामी विवेकानंद के पास आए। उनका मुखिया बोला,

“स्वामी जी, इस धरती पर पाप बहुत बढ़ गया है, इसीलिए प्लेग की महामारी के रूप में भगवान लोगों को दंड दे रहे हैं, पर आप ऐसे लोगों को बचाने का यत्न कर रहे हैं। ऐसा करके आप भगवान के कार्यों में बाधा डाल रहे हैं।” मंडली के मुखिया की कील जैसी बातें सुनकर स्वामी जी गंभीरता से बोले, “सबसे पहले तो मैं आप सब विद्वानों का नमस्कार करता हूँ।” इसके बाद स्वामी जी बोले, “आप सब यह तो जानते ही होंगे कि मनुष्य इस जीवन में अपने कर्मों के कारण कष्ट और सुख पाता है।

ऐसा जो व्यक्ति कष्ट से पीड़ित है और तड़प रहा है, यदि दूसरा व्यक्ति उसके घावों पर मरहम लगा देता है तो वह स्वयं ही पुण्य का अधिकारी बन जाता है। आज यदि आपके अनुसार प्लेग से पीड़ित लोग पाप के भागी हैं और हमारे कार्यकर्ता इन लोगों की मदद कर रहे हैं, वे तो पुण्य के भागी बन रहे हैं। बताइए कि इस संदर्भ में आपको क्या कहना है?” उनकी बात सुनकर सभी लोग भौंचक्के रह गए और चुपचाप सिर झुकाकर वहाँ से चले गए।

(i) कोलकाता में कौन-सी महामारी फैली थी?
(क) चेचक
(ख) प्लेग
(ग) हैजा
(घ) स्वाइन फ्लू
उत्तर
(ख) प्लेग

(ii) महामारी के विषय में कुछ लोगों की धारणा थी कि
(क) यह ईश्वर का कहर है
(ख) इस पर नियंत्रण असंभव है
(ग) दवाओं द्वारा इसकी रोकथाम संभव है
(घ) लोगों को उनके पाप का दंड मिल रहा है
उत्तर
(घ) लोगों को उनके पाप का दंड मिल रहा है

(iii) कुछ लोगों की दृष्टि में विवेकानंद जी द्वारा पीड़ितों की सेवा करना था
(क) लोक कल्याण में बाधा
(ख) लोक कल्याण में सहायता
(ग) ईश्वर के कार्य में बाधा
(घ) ईश्वर के कार्य में सहायता
उत्तर
(ग) ईश्वर के कार्य में बाधा

(iv) स्वामी विवेकानंद जी के अनुसार उनके तथा कार्यकर्ताओं द्वारा किया जा रहा कार्य था
(क) मानवोचित कर्म
(ख) पाप कर्म
(ग) समाज सेवा
(घ) पुण्य का कार्य
उत्तर
(घ) पुण्य का कार्य

(v) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक हो सकता है
(क) दंड
(ख) महामारी
(ग) कर्मों का फल
(घ) पाप और पुण्य
उत्तर
(घ) पाप और पुण्य